© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

बौद्ध पर्यटन के प्रचार–प्रसार में अनुवाद की भूमिका

सुरेन्द्र कुमार
शोध–छात्र,
भारतीय भाषा केन्द्र, जेएनयू,
नई दिल्ली

शोध आलेख सार – अनुवाद के लिखित एवं मौखिक दोनों रूप पर्यटन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अनुवाद जहां लिखित सामग्री को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करता है तो आशिु अनुवादक मौखिक रूप से पर्यटन स्थलों की जानकारी तत्काल प्रस्तुत करता है। जो पर्यटक किसी देश विशेष की भाषा नहीं जानते, वे आशु अनुवाद के माध्यम से अपने भ्रमण के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

मुख्य शब्द– बौद्ध, पर्यटन, प्रचार–प्रसार, अनुवाद।

स्त्रोत भाषा में कही गयी अभिव्यक्ति या विचार को उसी अर्थ एवं भाव के साथ लक्ष्य भाषा में प्रकट करना ही अनुवाद है। अनुवाद सिर्फ दो भाषाओं को ही नहीं दो संस्कृतियों को भी जोड़ता है। अनुवाद का विस्तार आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हो चुका है, जैसे– शिक्षा, खेलकूद, धर्म, विज्ञान प्रौद्योगिकी, साहित्य, विधि, बैंकिंग, वाणिज्य एवं बीमा आदि। पर्यटन का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है, बल्कि कहा जा सकता है कि अनुवाद पर्यटन उद्योग का आधार है।

पर्यटन –

पर्यटन आज वैश्विक उद्योग का रूप धरण कर चुका है। जैसे मानव शरीर के अन्दर भिन्न–भिन्न अंग एक प्रणाली के रूप में कार्य करते हैं, वैसे ही इस उद्योग में परिवहन व्यवस्था, आवास व्यवसाी होटल टूर ऑपरेटर, ट्रैवल, एजेंसी, टूर गाइड, सरकारी पर्यटन विभाग, विज्ञापन एजेंसियां, मुद्रण उद्योग, कलाकार आदि अंग एक प्रणाली के रूप में कार्य करते है। पर्यटन के अनेक रूप हैं– सांस्कृतिक पर्यटन, सामूहिक पर्यटन, विशेष पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, धार्मिक पर्यटन आदि।

किसी राष्ट्र के विकास में पर्यटन के केवल महत्त्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है बल्कि विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में सांस्कृतिक परिवर्तन लाने का एक महत्त्वपूर्ण साधन भी है। राष्ट्र के आर्थिक विकास में, विदेशी मुद्रा अर्जित करने में तथा रोजगार के विभिन्न स्त्रोत उपलब्ध कराने में पर्यटन का अद्वितीय स्थन है। पर्यटन विश्व के विभिन्न देशों के मध्य पारस्परिक संबंध स्थापित करने, घनिष्ठ सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संबंध बनाने तथा विश्व में शांति स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

पर्यटन का तीव्रता से विकास होने के कारण आज विश्व के अनेक देशें की अर्थव्यवस्था इस पर निर्भर हो चुकी है। पर्यटन स्थल बाजार के रूप में बदल रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर पर्यटन का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। यही कारण है कि प्रत्येक देश ने पर्यटन उद्योग में व्याप्त विका की संभावनाओं पर ध्यान देना शुरू कर दिया है। भारत के विभिन्न राज्यों में सर्किट पर्यटन इसी का परिणाम है, जैसे उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश का बौद्ध सर्किट आदि।

भारत में बौद्ध पर्यटन–

भारत प्राचीन काल से ही तीर्थ यात्रियों के लिए प्रसिद्ध स्थल रहा है। धार्मिक ज्ञान की खोज और आध्यात्मिक शांति के लिए लोग भारत की यात्रा करते रहें हैं। धर्मावलंबियों को भारत की स्मारक संपदा में गहरी रूचि है। बौद्ध स्थल इसके लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। प्राचीन काल में सम्राट अशोक एक बार इन स्थलों की यात्रा पर गए थे और उन्होंने इस यात्रा को 'धम्म यात्रा' का नाम दिया था। भारत में बौद्ध पर्यटन के विभिन्न रूप हैं, जैसे– विहार, स्तूप, चैत्य, बोधिवृक्ष, संग्रहालय, त्यौहार आदि।

विहार– विहार वह स्थान होता है जहां भिक्षु–भिक्षणियां निवास करते हैं। प्राचीन काल में इनका उपयोग वर्षावास के समय भिक्षु निवास स्थान के रूप में करते थे। ये शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। जैसे– नालंदा महाविहार।

स्तूप–स्तूप–मिट्टी के टीले जैसी संरचना होती है। भारत में महापुरुषों के अवशेषों को मिट्टी में दबाकर सुरक्षित रखने की परंपरा बहुत पुरानी है। बौद्धों ने इसको अपनाया और स्तूपों का निर्माण किया।

बौद्धों स्त्रोतों के अनुसार बुद्ध के शरीर के अवशेषों को आठ भागों में विभक्त किया गया था और उन पर आठ स्तूप बनाए गए थे। सम्राट अशोक के शासनकाल में पुनः इन स्थलों की खुदाई हुई और बुद्ध के अवशेषों पर 84000 स्तूप बनवाए

थे। स्तूप का निर्माण प्रेरणा और पूजा के उद्देश्य से किया गया था ताकि लोग बौद्ध धर्म से प्रेरित हो सकें और बुद्ध के पद् चिह्नों पर चल सकें।

चैत्य– चैत्य पूजा का वह स्थान होता है जिसके मध्य में स्तूप होता है। वर्षा ऋतु में भिक्षु पहाड़ी निवासों पर ठहरते थे और निवास स्थल का उपयोग आश्रम स्थल के रूप में किया जाता था। आश्रम स्थल के साथ–साथ भिक्षुओं को प्रार्थना, ध्यान, प्रवचन के लिए भी किसी विशेष संरचना की आवश्यकता होती थी। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पहाड़ों को काटकर जो हॉल बनाए गए, वे चैत्यगृह कहलाएं। जैसे– अंजता, एंलोरा के चैत्य गृह।

बोधिवृक्ष–बौद्ध पर्यटन में बोधिवृक्ष का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब सिद्धार्थ गौतम ने गृह त्याग किया तो वे बोधगया गए और वहां जिस वृक्ष के नीचे बैठकर ज्ञान प्राप्त किया और बुद्ध कहलाएं, वह आज बोधिवृक्ष के नाम से प्रसिद्ध है। यह वृक्ष मंदिर के पश्चिम में स्थित है और बौद्ध पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।

भारत में प्रमुख बौद्ध स्थल–बौद्ध स्थल संसार के पर्यटकों के आकर्षण का केंन्द्र हैं, विशेषकर बौद्ध पर्यटकों/महात्मा बुद्ध ने अपने महापिरनिर्वाण से पूर्व आनंद से कहा था कि धम्म के मार्ग पर चलने वाले धर्मावलंबियों को चार स्थलों की यात्रा अवश्य करनी चाहिए, जिनमें लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ एवं कुशीनगर शामिल हैं। जो बुद्ध में जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं से संबंधित हैं।

जिनमें बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति, प्रथम उपदेश एवं महापरिनिर्वाण शामिल है।

इनके अतिरिक्त भी बौद्ध स्थल हैं जो अपनी वास्तुकला, विपस्सना केंद्रो, मठों एवं आधुनिक बौद्ध स्थल के रूप में विश्व प्रसिद्ध हैं। जिनमें अजंता एवं एलोरा की गुफाएं, धम्मगिरि, तवांग मठ, दीक्षा भूमि एवं धर्मशाला शामिल है।

बौद्ध पर्यटन साहित्य एवं अनुवाद–बौद्ध पर्यटन साहित्य वह साहित्य है जो बौद्ध स्थल, संस्कृति इतिहास एवं वास्तुकला को केन्द्र में रखकर लिखा जाता है। इस साहित्य में बौद्ध स्थलों के धार्मिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व का वर्णन होता

है। जैसे– सारनाथ, बोधगया, सांची आदि। यह बौद्ध पर्यटन के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें बौद्ध स्थलों के विषय में लिखित पुस्तकें, गाइड पुस्तिकाएं, पर्यटन पत्र–पत्रिकाएं आदि शामिल हैं।

पर्यटन साहित्य संबंधी अनुवाद जहां पाठकपरक अनुवाद की अपेक्षा करता है, वहीं यह भाव के परिपेक्ष्य में संस्कृति, सभ्यता, इतिहास एवं भावायी क्षमताओं की भी अपेक्षा करता है। इस साहित्य का अनुवाद आर्थिक, सांस्कृतिक एवं विकासात्मक गतिविधियों को गतिशील बनाने का कार्य करता है। चाहे बौद्ध पर्यटन स्थलों को या सांस्कृतिक स्थल (ताजमहल) हो, ये सही अर्थो में भिन्न–भिन्न समाजों, संस्कृतियों और राष्ट्रों को जोड़ने का काम करते हैं। इसलिए इस साहित्य के अनुवादक को अनुवाद करते समय सजता, विषय की जानकारी, तकनीकी शब्दों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

बौद्ध पर्यटन एवं आशु अनुवाद–आशु अनुवाद पय्रटन का अभिन्न अंग है। बिना आशु अनुवाद के पर्यटन का विकास संभव नही है। अतः पर्यटन को विकसित करने के लिए आशु अनुवादकों (युभाषियों) की व्यवस्था अधिक व्यवहारिक है। चीन, जापान, कोरिया, थाईलैंड आदि से आने वाले पर्यटक या बौद्ध धर्मावलंबी भारतीय भाषाएं नहीं जानतें हैं। ऐसी स्थिति में प्रटकों को बौद्ध स्थलों एवं भारत के अन्य स्थलों तक आने–जाने के लिए दुर्भाषए की आवश्यकता होती है। अभी भारत में अन्य देशों की भांति आशु अनुवादक संस्थागत रूप में नहीं है। सिर्फ बड़े–बड़े होटलों का पर्यटन संस्थाओं में आशुअनुवादकों की सूची होती है।

बोधगया, वाराणसी आदि तीर्थस्थलों पर कुछ स्थानीय लोग चीनी, जापानी आदि भाषाओं की प्रारंभिक जानकारी रखते हैं तथा काम चलाऊ आशु अनुवाद के द्वारा उन यात्रियों की सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त, इस तरह के पर्यटक जब कभी कंडक्टेड टूर में आते हैं तो अपने साथ अपने देश से आशु अनुवादक साथ लाते हैं किन्तु उन्हें स्थानीय नियमों की जानकारी न होने के कारण पर्यटकों को समस्या आती हैं। जबकि स्थानीय अनुवादक को क्षेत्रिय समस्याओं का पता होता है। और पर्यटकों की सुविधा के लिए वह हर संभव प्रयत्न करता है। लेकिन आशु अनुवाद के क्षेत्र में अभी सुधार की आवश्यकता है और आशु अनुवादकों को और अधिक प्रशिक्षित करने की भी जरूरत है, विशेष रूप से उनके संप्रेषण कौशल पर ध्यान देने की बहुत आवश्यकता है। आशु अनुवाद एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है तथा मनोवैज्ञानिक कारक इसे प्रभावित करते हैं। इसलिए आशु अनुवाद को मनोवैज्ञानिक रूप से भी प्रशिक्षित करना बहुत जरूरी है।

संक्षेप में कहा जाए तो अनुवाद के लिखित एवं मौखिक दोनों रूप पर्यटन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अनुवाद जहां लिखित सामग्री को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करता है तो आशु अनुवादक मौखिक रूप से पर्यटन स्थलों की जानकारी तत्काल प्रस्तुत करता है। जो पर्यटक किसी देश विशेष की भाषा नहीं जानते, वे आशु अनुवाद के माध्यम से अपने भ्रमण के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी–पुस्तकें

1. श्रीकृष्ण आनंद, भगवान बुद्ध : धम्म–सार व धम्म चर्या, मुम्बई, समृद्ध भारत प्रकाशन, 2013
2. नेगी, जगमोहन, गौरव मनोहर, संपूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, 2015
3. सिंह, प्रियसेन, भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल, दिल्ली हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 2016
4. अनुवाद के क्षेत्र–2, इग्नू, दिल्ली, 2014

अंग्रेजी–पुस्तकें

1. Jacob, Robinet, Buddhist Tourism in India, Delhi, Abhijeet Publication, 2013.
2. Mitra, Swati (Edited), Walking with the Buddha : Buddhist Pilgrimage in India, Delhi, Good earth Publication, 2010.

पत्रिकाएँ

हिन्दी की पत्रिका

1. सेठी, हरीश कुमार, पर्यटन का क्षेत्र और अनुवाद की संभावनाएँ, अनुवाद (त्रैमासिक) अंक 112, पृष्ठ संख्या 58–62, 2002

अंग्रेजी की पत्रिका

2. Aggarwal, M.,Himanshu Choudhary and Gaurav Tripathi, Enhancing Buddhist Tourism in India : An Exploratory Study, Worldwide Hospitality and Tourism Themes, Vol. 2, PP. 80-97, 2009